M.A. SEM-I Paper I

डॉ० कुमारी चम्पू
महाराजा कॉलेज
आरा
हिन्दी विभाग

ध्वनि परिवर्तन की दिशाएँ —

ध्वनि परिवर्तन को ध्वनि विकास या ध्वनि विकार भी कहते हैं। ध्वनियों में विविध प्रकार के विकार उत्पन्न होते रहते हैं जिसके फलस्वरूप ध्वनियों में विविध-प्रकार के परिवर्तन देखे जाते हैं। अतः ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं को निम्नलिखित रूप में देखा जा-सकता है —

(1) लोप – कभी कभी बोलने में मुख-सुख, शीघ्रता, स्वराघात आदि के प्रभाव से कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है। यह लोप तीन प्रकार का होता है। (i) स्वर लोप (ii) व्यंजन लोप (iii) अक्षरलोप

(i) स्वर लोप – यह भी तीन प्रकार का होता है —

(क) आदि स्वर लोप – जब किसी शब्द के आरंभ में किसी स्वर का लोप हो जाता है तो उसे आदि स्वरलोप कहते हैं। जैसे- अनाज > नाज
अहाता > हाता

(ख) मध्य स्वर लोप :- जब किसी शब्द के मध्य में किसी स्वर का लोप हो जाता है तो उसे मध्य स्वरलोप कहते हैं। जैसे— नरक > नर्क
उलटा > उल्टा

(ग) अन्त्य स्वर लोप – जब किसी शब्द के अंत में किसी स्वर का लोप हो जाता है तो उसे अन्त्य स्वर लोप कहते हैं जैसे – आम्र > आम
रात्रि > रात

(ii) (क) आदि व्यंजन लोप – जब किसी शब्द के आरंभ में किसी व्यंजन का लोप हो जाता है तो उसे आदि व्यंजन लोप कहते हैं जैसे-
स्थाली > थाली। श्मशान > मसान

(ख) मध्य व्यंजन लोप :- जब किसी शब्द के मध्य किसी व्यंजन का लोप हो जाता है। तो

उसे मध्य व्यंजन लोप कहते हैं जैसे - कार्तिक > कातिक
निष्ठुर > निठुर
(ग) अन्त्य व्यंजन लोप - जब किसी शब्द के अन्त में किसी व्यंजन का लोप हो जाता है, तो उसे अन्त्य व्यंजन लोप कहते हैं, जैसे -
उष्ट्र > ऊँट, निम्ब > नीम,
(iii) अक्षर लोप - यह चार तरह का होता है
(क) आदि अक्षर लोप - जहाँ किसी पूर्व प्रचलित शब्द के आरंभ से कालान्तर में कोई स्वर और व्यंजन लुप्त हो जाए वहाँ आदि अक्षरलोप होता है - जैसे - व्याकुल > आकुल
शहतूत > तूत
(ख) मध्य अक्षर लोप - जब किसी शब्द के मध्य के कालान्तर में कई स्वर एवं व्यंजन लुप्त हो जाए वहाँ मध्य अक्षर लोप होता है। जैसे -
भंडागार > भंडार, शादबाश > शाबाश।
(ग) अन्त्य अक्षर लोप - जब किसी शब्द के अन्त में कई स्वर एवं व्यंजन लुप्त हो जाते हैं वहाँ 'अन्त्य अक्षर लोप' होता है। जैसे -
मौक्तिक > मोती, माता > माँ
(घ) समाक्षर लोप - जब किसी शब्द में एक ही ध्वनि या एक ही अक्षर या अक्षर समूह दो बार आए तो एक का लोप हो जाता है जैसे -
नाककटा > नकटा, खरीददार > खरीदार।

(2) आगम - लोप का उलटा आगम होता है, अर्थात इसमें कोई नयी ध्वनि आ जाती है। ऐसा प्रायः उच्चारण की सुविधा के कारण होता है। स्वर और व्यंजन दोनों में आगम होता है। आदि मध्य और अंत के आधार पर इसके भी भेद किए गए हैं।

इसके तीन भेद हैं—
(i) स्वरागम – जब किसी शब्द के आरंभ में
(क) आदि स्वरागम – जब किसी शब्द के आरंभ में कोई स्वर ध्वनि आ जाती है, तो उसे आदि स्वरागम कहते हैं यह ध्वनि ह्रस्व होती है जैसे—
स्टेशन > इस्टेशन, कलंक > अकलंक
(ख) मध्य स्वरागम – अज्ञान, आलस्य एवं बोलने की सुविधा के लिए कभी कभी शब्दों के मध्य भी स्वरागम होता है जैसे – जन्म > जनम, मिश्र > मिसिर
(ग) अन्त्य स्वरागम – जब किसी शब्द के अंत में कोई स्वर ध्वनि आकर जुड़ जाती है तो वहाँ अन्त्य स्वरागम होता है। जैसे – गुरु > गुरुआ, दवा > दवाई, स्वप्न > सपना
(ii) व्यंजनागम – इसके भी तीन भेद होते हैं।
(क) आदि व्यंजनागम – जब किसी शब्द के आरंभ में कोई व्यंजन ध्वनि आ जाती है तो उसे आदि व्यंजनागम कहते हैं। जैसे – ओष्ठ > होंठ, उल्लास > हुलास
(ख) मध्य व्यंजनागम – जब किसी मूल शब्द के मध्य में किसी व्यंजन का आगमन होता है तो वहाँ मध्य व्यंजनागम होता है – जैसे – जेल > जेहल, वानर > बन्दर
(ग) अन्त्य व्यंजनागम – शब्दों के अंत में नए व्यंजनागम को अन्त्य व्यंजनागम कहते हैं। जैसे—
भौं > भौंह, परवा > परवाह
(iii) अक्षरागम – अक्षरागम भी आदि मध्य एवं अन्त्य होता है। जैसे—
आदि अक्षरागम – गुंजा > घुँघुची (भोजपुरी)
मध्य अक्षरागम – आलस > अलकस
अन्त्य अक्षरागम – डफ – डफली
(3) विपर्यय – इसे 'परस्पर-विनिमय', वर्ण-व्यत्यय आदि नाम भी दिए गए हैं। जब किसी शब्द या पद के स्वर-व्यंजन एक स्थान से दूसरे स्थान पे चले जाते हैं और दूसरे स्थान से पहले स्थान पे चले

Scanned with CamScanner

आते हैं तो वहाँ विपर्यय होता है जैसे —
वाराणसी > बनारस, अम्लिका > इमली
(4) समीकरण — जब दो भिन्न ध्वनियाँ पास रहने के कारण सम हो जाती है वहाँ समीकरण होता है यह दो प्रकार का होता है (1) पुरोगामी (2) पश्चगामी
(1) पुरोगामी — चक्र > चक्क, लग्न > लग्ग
(2) पश्चगामी — धर्म > धम्म, दुग्ध > दुद्ध
(5) विषमीकरण — समीकरण के विपरीत कार्य करनेवाला विषमीकरण कहलाता है। जब एक ही शब्द में दो समान ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं तब एक लुप्त अथवा परिवर्तित हो जाती है। जब प्रथम वर्ण ज्यों का त्यों रहता है और दूसरा परिवर्तित हो जाता है तब पुरोगामी विषमीकरण होता है। जैसे कंकण > कंगन, काक > काग। परन्तु जब द्वितीय वर्ण अपने वास्तविक रूप में रहता है और प्रथम वर्ण में परिवर्तित हो जाता है तब पश्चगामी विषमीकरण होता है। जैसे —
मुकुट > मउर और नुपुर > नेउर
(6) सन्धीकरण — जहाँ शब्दों के मध्यवर्ती व्यंजन पहले स्वरों में परिवर्तित होकर फिर अपने निकटवर्ती स्वरों के साथ संधि कर लेते हैं वहाँ सन्धीकरण होता है जैसे — मयूर > मऊर (अ + ऊ + ओ) नयन = नइन — नैन (अ + ई + ए)
(7) ह्रस्वीकरण — जब दीर्घ स्वर या व्यंजन ह्रस्व हो जाते हैं, वहाँ ह्रस्वीकरण होता है, जैसे —
बादाम > बदाम, पाताल > पताल
(8) दीर्घीकरण — जब ह्रस्व स्वर या व्यंजन दीर्घ हो जाते हैं, वहाँ दीर्घीकरण होता है जैसे
कंटक > काँटा, लज्जा > लाज।
(9) अनुनासिकीकरण — जब निरनुनासिक ध्वनियाँ अनुनासिक हो जाती है वहाँ अनुनासिकीकरण

Scanned with CamScanner

हो जाता है जैसे – सत्य > साँच श्वास > साँस
(10) घोषीकरण – उच्चारण की सुविधा के कारण कुछ अघोष ध्वनियाँ घोष हो जाती है, वहाँ घोषीकरण होता है जैसे – मकर > मगर, शती > सदी।
(11) अघोषीकरण – इसमें घोष ध्वनियाँ अघोष हो जाती है। जैसे – मेघ > मेरव, खर्ज > खर्च
(12) महाप्राणीकरण – अल्पप्राण ध्वनियाँ जब महाप्राण हो जाती है तब वही महाप्राणीकरण कहलाता है। जैसे – पृष्ठ > पीठ, गृह > घर, हस्त > हाथ
(13) अल्पप्राणीकरण – कुछ शब्दों में महाप्राण का अल्पप्राण हो जाता है, वही अल्पप्राणीकरण कहलाता है। जैसे – सूखना > सूकना